

॥ स्वा नमः ॥ पुष्पम वा दत्तं यत्नः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ दशकोपायः ॥
॥ हातकेभ्यश्च शिवपूजा ॥ किंगनफे
ये ॥ हातकेभ्यश्च हातपद्मशानरुद्राय क
तांताय इदमासनं ॥ नपादिपते ॥ च
कोनहादकपाततने ॥ हातद्वयसि
पूजा ॥ जलांजलिश्चिह्नं पात्रासनं नपा
दियते ॥ नसतिपूजा ॥ जलांजलिः उ
दकपात्रासनं नपादीयते ॥ यमधार
पूजा ॥ जलांजलिः यमधारपात्रा
नपादीयते ॥ पुष्पमपादिपते ॥
॥ अथ ॥ दक्षिणहस्ताय दत्तं शुक्लं

॥ १ ॥

दक्षिण
हस्ताय
दत्तं शुक्लं

टिकुटि ने श्वन ॥ उधरि हां महा भीम
 वसुन्धरा च नो भित्त ॥ अष्टादश भूजा
 आभार नीलाभान लस प्रभ ॥ सर्वा
 युद्ध पुता हस्त बल दंद म्ब जायते ॥
 हात के स्वराय च न पुष्प म्ब जादि यते
 योग न कया तने ॥ हात के स्वराय पारा ॥ २ ॥
 चै हलाच मया दी यते ॥ सिद्ध म
 वाक्षत म्बो पवीत पुष्प पुष्प यम
 नैव द्यादि म्बो मया दी यते ॥
 की म्बो म्बो ॥ ई ई क ल पुष्प पुष्प
 दि म्बो म्बो म्बो पुष्प दी यते म्बो

रिता सुता संवत् ॥ मया दी यते ॥
 कुरा हातो कया द्वा स चो गुण का प
 स पो चीता दुत सति स पुना तो के ॥
 हात के स्वराय च सिद्धा सो दंद म्ब जादि
 यते ॥ ८ ॥ स ॥ सिद्धा सो दी ॥ हात
 के स्वराय उदक वा सो दंद म्ब जादि य ॥ ३ ॥
 ते ॥ म्बो म्बो म्बो म्बो म्बो ॥ हात के
 स्वराय म्बो म्बो म्बो म्बो म्बो म्बो
 ते ॥ हातो कुरा पो के म्बो म्बो ॥ का ह्म
 तये वल्लु हा हि न दी यते ॥ म्बो म्बो
 हा हा म्बो ॥ म्बो म्बो म्बो म्बो म्बो

शुक्तिपासादि कीदितातेन सुम्भं मया दत्तं
 अक्षयपीवतीजलं ॥ स्तोत्र ॥ यमाय चर्म
 राजा यमृतकेवा राका यम ॥ वैवस्वताय का
 लाय ॥ सर्वे लोकक्षयाय च ॥ ओ दुम्बरायः
 दग्धाय वीलाय क्षयाय च ॥ धृकोदराय ॥ ५४ ॥
 चित्राये चित्रगुप्ताय चैव नमः ॥ उग्रो गृध्रं द
 हन्ताय माहात्महि बगामिने ॥ ॥ सासिताय
 नमस्तुभ्यं नरकाभाय चैव नमः ॥ ॥ भजं
 ध्याये पूजामया दीयते ॥ इति हातके स्तोत्र
 शिव पूजा ॥ ॥ अथ पिराडथये विधी ॥

पोतास न सोचा क बोये ॥ कुशाक्षि चूठपा
 वे स्वका मरवरी लाये ॥ हनि कुशाका यापि
 राडा सनयाये ॥ काक वलि पिराडा सने नया
 दीयते ॥ न हादवया ज वस ॥ तये ॥ त्वा
 न वलि पिराडा सने नया दीयते ॥ न हादवया ॥ ५ ॥
 स्व वस ॥ तये ॥ ॥ दधु सतये ॥ अमूक प्रेता
 वलि पिराडा सने नया दीयते ॥ की गल कया
 पिराडा या सने नया दीयते ॥ चका कोठूत
 सतये ॥ कठूत सपन्ना मृत हा मो कृत रा
 या वा ले ॥ पिराडा थये ॥ सत्य दस जो सा

शु. गत्वा ३ पिराउ दये के दस की वा नीत्य न सुत
सा ३० पिराउ दये के ॥ पिराउ धये ॥ जापो का कव
दि ॥ वाक्य ॥ य मोहि नम दु तो सी वा य मोहि
ना हा मु ॥ मे स प्र जन्म क तो पाये वलिं गृहं
दु वा यसा ॥ पु थ म क ला का क व हि पिराउ न ॥
या दी यते ॥ ॥ त्वान वलि वाक्य ॥ य मे त ज स्व
रु पे न त्या ग रु पे न ये ग तु ॥ गर का पु त सि ध्य
थ पिराउ दा गो द क की या ॥ पु थ म क ला त्वा
न वलि पिराउ न का दी यते ॥ ॥ द थु स पु त
थ नी पिराउ वा क्य ॥ ॥ का क त्या ग न हे

आ ना प म्मा न्त त परि पू रित ॥ द त पि लं म या
ते न पे ता दु म्मा प्र सि ध्य य ह ष म्मु हि शी र
पूर क प्र थ म क ला अनु क प्रे त व लि पिराउ
म या दि यते ॥ १ ॥ इ ति पु थ म क ला पिराउ क म ॥
नी त्य जु ल त्वा का क व नी त्या त व लि पु र्व व र
वा क्य दु ती य त ती य क मे सी रा गो क ॥ पु त ॥ ॥
व लि ना ॥ वा क्य पु र्व व र ह ष दु ति य क री
ना सि का पू र क दु ति य क ला अनु क प्रे त व
लि पिराउ म या दि यते ॥ २ ॥ ये व त ति य क
ला मु ज व क्षा पू र क त ति य क ला अ मु

॥ ५ ॥
कप्रेतवलि पिरास न० ॥ ३ ॥ एष चतुर्थी कला
नाभि गुड पुरक चतुर्थी कला असूक प्रेता
वलि पिरास न० ॥ ४ ॥ एष पञ्चम कला
उज्ज्या प्राद पुरक पञ्चम कला असूक
प्रेतवलि पिरास न० ॥ एष सप्तम कला सर्व
नमं पुरक सप्तम कला असूक प्रेतवलि
पिरास न० ॥ ६ ॥ एष अष्टम कला सर्वना
दि पुरक अष्टम कला असूक प्रेतावलि
पिरास नया दिपते ॥ ७ ॥ एष अक्षय क
ला दं नरोमादि पुरक अक्षय कला अ

॥ ८ ॥ एष नवम
कला वीर्य पुरक नवम कला असूक प्रे
तवलि पिरास न० ॥ ९ ॥ एष दशम कला
सर्वाङ्ग पुरक दशम कला असूक प्रेतेव
लि पिरास न० ॥ १० ॥ कला सहासिका पिरास ॥ ११ ॥
नाग यामे ॥ काक वलि पिरास नाग य
मादि यते ॥ एषा नवलि पिरास नाग यमा
दि यते ॥ १२ ॥ असूक प्रेतावलि पिरास नाग य
मादि यते ॥ १३ ॥ कला सहासिका सतवा
ती ॥ १४ ॥ दक्ष विद्य ॥ इति वाक्य ॥ ॥ १५ ॥

नृणां हृत्ता वा यन्मो घंस्या ने मृत्यु मा भूता ॥ भास
मापुती गृह्णति मुमे पिण्ड तु मा भूते ॥ का क वलि
जिहो तीलो द का घं मया दि यते ॥ त्या ग व लि पि रो ॥
वे च स त कुलो जाता द्वौ त्वा नो स्व जने ॥ तो भ्यो
वे च स पाद मं त्या न मे तं दुती पत्ता ॥ त्या ग व लि ॥ १ ॥
पि रो ति लो द का घं मया दि यते ॥ पु त व लि पि
रो ॥ का क स्वा न त मे स्वा रा ग प च्छा मृत प्र पू रितं
पु त ल ये सु सि भ्य र्थं मद्रु पु त्र दु जा यते ॥ अ
मु क पु त व लि पी रो ती लो द क म या दि य
ते ॥ का क व लि त्या ग व लि पु त व लि पि रो

अर्जका च दन पु ष्य त द्ग रा ज न द्ग ज त पे ॥ का क व
लि पि रो य जं प वित च द ना क्ष तं ग रा ज मं ग रा पु
छं म या दी ये ते ॥ हं वं त्या न व लि पि रो पु त व
लि पि रो नं त पे ॥ जो ता स नं स्व था क को ये ॥ फ
न कु ल म थी धो द्धुं म थी ग्वा गे व जी धु प ॥ १ ॥
दि यं च्छा ये ॥ हं वं नं त पे ॥ की ग रा क ये ॥ चो
क तु र्हा का तो ते ॥ का क व लि पी रो त्या न व लि पि
रो पु त व लि पि रो र्हा द्धु प दि य त्रे व द्वा दि फ
न प का ना दो ता पु ल सं ध ॥ म लि द्वा र लु म का
दि य ते ॥ कु ल हा मो न का प त स को धी ना दु र्हा

सति सनसति स यम चारा स भुगा तो के ॥ का
 वति पिरो स्मानवति पिरो अमु क प्रेतवति पि
 रो सिर वा सो दक उदक वा सो दक यम चारा
 वा सो दक समादीयते ॥ को के ना होये ॥ का ह पु
 द्मुतये ॥ वस्तु हरं समादीयते ॥ यम चारा स य
 के ॥ पुथ मे आ यते मुक्ति द्वितीये भोज वस्तु मे
 तति मे ना मि का क रो वस्तु मे वा ह मु चते ॥
 पञ्चमे हस्त ना मि अ य वे उरु स ज्ञानु नो स
 प्र सं जे च वा दो व अ य मे त व मे व च ॥ न व मे
 रो ज न र वा द्या द स मे वे त ना म वे र ॥ उ न मु क

प्रेतवति पिरो य अ उ प्र स ह क प ना म य
 दियते ॥ प्रेतवति पि रो अ न स व य म वा दो
 यते ॥ उरु सति हो ना स्य गु पि रो स तो न के ॥ ये
 के चित प्रेत ह पे न व र ते पि त नि स ह ॥ क्षी र
 पा जे रा ल य तु ति न मि र दि मि मी भि ते ॥ का क
 वति स्वा न वति प्रेत पति पि रो क्षी र पा जे र
 उ र क्षी य म वा दियते ॥ अ का तो के अ न स मे
 ना तो पु ये ॥ उरु सति हो ना तो न के ॥ ये के चि
 प्रेत ह य न व र ते पि त नी स ह ॥ उ द क वा
 जे रा ल य भु ग र नी ति न नी स ह ॥ उ द
 क वा सो दक समादी य ते ॥ सति भो पु ये ॥

यम आराध्या न संशय कुशन हाये के ॥ इम सानिपु
स्थितो पुत्र विना चा पीदिता सदा ॥ तेन चारु
मया दत्ता अक्षयं विवतां इति ॥ ये मयारो
कुशोदकं उरुक्षीयं मया दीयते ॥ हो ध्या हो नातो
के ॥ का क बलि स्थान वलि पुत्र वलि पिरोड पि १५
राउ पात्री दवं मया दीयते ॥ ओ पु ये ॥ ता ये
की गेन कया वो हो या ये ॥ नम आभित
वरागे य वलि ठ ला य वे न मे ॥ अमे तजस्य
अत्या प वि तां आ का प वे न मः ॥ इ दु ते न र
क क्षीरं स व मो क्ष क ले न मः ॥ त्या न रु पा य का
र न म कृता ने क न सं भवं ॥ २ ॥ न मि च भा

वं न च स तु भा वी आका ल व रीं महि का ल न मः ॥
इ म्भो स दा तां स न का पा ल यें त त स्ते न मे स तु
अ त का न द रा दे ॥ अ न ग धा रि म या दी य ते ॥
म हा दे व पा त ता त ते ॥ हा त के स रा म पु यो न मा
दि य ते ॥ दु ह स री ति ॥ ज नो ज नो क्षीर पा वे न मः
पु यो न मा दी य ते ॥ न स री ॥ इ नो ज नो उ द क
पा वे पु यो न ॥ य न आ रे स ॥ य न आ रे पु यो न
या दी य ते ॥ पी रे स ॥ का क व री पि रो ड त्या
न व लि पि रो पु त व लि पि रो पु यो न म रा दे
य ते ॥ म हा दे व पा त रा ड कु री न रे स वा ड री के ॥
स री नो पा पा रि ता पु रा कृ ता रि ता पू र्वे कृ ता नी पु

॥ यन मोति ॥ पुत्रे कते ते ते जं न पिरा पात्रे भागी
रथो त्वं शर तां पुया निद्रा ॥ न पं न भो पुये ॥ ॥
जी गोतीने ॥ का क बलि त्वस्थान वा सो भवतु
त्वान वली त्वस्थान वा सो भवतु ॥ अ मुत्र पु
त बलि त्वस्थान वा सो भवतु ॥ पी रस पात्र ॥ १६
त्वस्थान वा सो भवतु धर रा मूर्तये त्वस्थान
वा सो भवतु ॥ ॥ नेत्र के सु रं मु न सा शि
वलि दु दु सली ॥ सली य म धारा त्वस्थान
पात्रे ॥ ॥ हात के अरा ये र म सा न न द्रा ए
क ता भा म पु ता भी प त ये त्वस्थान वा सो भ

वतु ॥ ॥ जं गं ज नि शि र पा व त्वस्थान वा सो भ
वतु ॥ ॥ जं गं ज नि उ द क पा व त्वस्थान वा सो
भवतु ॥ ॥ ई र नी र ई ई शि र य म धा पा व त्वस्था
न वा सो भवतु ॥ ॥ श्री त्व र स की या गु ॥ ॥ १७
पिरा मु को त्वस्थान पात्रे ॥ मे गु त्वस्थान पात्रे
म्या श्री ॥ का क बलि पिरा को ॥ सत मा सु सि
पा र वा य ॥ त्वान थ लि सु सि प्रा र ॥ ॥ १८
ली सु री क धु स वा ये सा न ॥ नी त्वे र
स की या गु ॥ ॥ १९

श्री गुरुं के लु हु जल सा पि राय पा थाल की होले
श्री हो होले ॥ ॥ प्रा ह्य रा पा थाल पाये ॥ यत्र
नान सक्ता परिवा ल्य चा से खाना मो हु ये ॥
हो पां को वी ने ॥ उन वो हा मो सि तु ई का लो चा
आता का ये अ ने लो लु सि थी ये का लो का
पा मो हु ये ॥ प्रा ह्य रा व ल्य ० न व ह्य ये ॥ व
ल्य ने ती ये ॥ को ह्य स ० सी तु तया प्रा ह्य रा
या तु ती स तये अ का हि नि से त ये ॥ हा पा
मी लू व्य अ धि वि ये ॥ ये ही लू व्य स ह्य
लु ॥ प्रा ह्य रा पा तु ती ल्य पा स तये ह्य पा स

गो ना ल्य ची क ० न उ या तु ती स तये ॥ सी तु ह्य
ल्य पा उ मा ग सा ग म को ये ॥ ० न स नो ने उ ० ॥
ह स न ग के ने ॥ ई ती द हा पो रा ह्य जी या अ न
व ह्य नी स ता पो र्वा ये वि ची ॥ स त ल्य हा ने १ को सि
क ० १ उा की व जी लो चा १ पं ला ५ ० ॥ ल्य उ ह्य
लु वि लु वा स तु म लु थु नी त ये लु ती ल्य
स तये ॥ हा मो लु स ० ल्य पा हा ये का त ये ॥ अ
धः अ लु न गो ज अ क क ना स पु ता ये ई दे लु
ग ती लो पा नी ई द म न लो व ल्य ती ई व य त
त यो न ती ह्य ती ॥ ती ० न द क नी ये ॥ अ लू क

[illegible]

उच्च पाचै जल पाचै विभक्त कर्मो देव ते दीपमा
 शतै वही देव ते हर्मि दुर्ग देव ते उपान होतु
 सा नां गिरौ देव ते येका दसा से कं प तापा
 क व्यं ज नी दी र द म नं सो प स्वर ता पु त रूप २१
 का पा नी का य नु दु स व्यं तु भ्रम म हं तु प वि
 छ ता म् ॥ ॥ दक्षि ना तये ॥ इति का पा नि क
 पा सं क ल्प ॥ ॥ मा हा धा ल त पा त सै क
 व्य पा ये ॥ ॥ हा नो कु स ल र्थ का पा हा ये
 का तये ॥ अ घ् अ नू क गो च अ नू क ता स
 वे त दि व गत द सा ह स्म त त्रौ मा हा धा ल ता पु

तस्य तवाय ईदं वा सं उरं ग पो स का दि व स्त्रं
 ५ ह स्त पा दे व तं हि दं न्य रो प्य वा मु द्रि को भा
 भर्ति अं का रा दि म ठा दे व तं ॥ यथा यथा
 निर्मित ओ न यं ज ना दी पा क भा रा ई भोज
 न पा वं दुग्ध पा नी वी भ्य क ती दे व तं उरि
 पा वं न कृ ता दे व तं दि प भां ई उग्नि दे व २२
 तं द्रु ई ई नु दे व तं उ पा न हो उ पा नां गि
 री दे व तं ॥ ई ई ची पी ता ई दधि दुग्ध
 ५ त ल कु रा व का नी ना ना यं अ ना दि व द्ध
 मां सा दि ना ना निर्मित स म ल भक्ष्य दुग्धा

दि य ठा रा नि गृ हो व स्त्र ती दुग्धा य म हा प्रा
 हा ता य प्रे त रु पा य उ मु क प्रे त ल वि नु
 ती स्व गं प्रा ष्ण थी ई दं प्रे त ल यं तु भ्य म
 हं उ प ति ष्ठ ता न् ॥ ॥ दक्षिण ॥ ई ता ये दू ता
 भा या त सं क र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ २३
 अ ये का द स आ द्रु ॥ ॥ सु ति व ने मा ह्ये ॥ सु
 ति थी के ल वि मा मा हा दे व द ये के ॥ द क्षि
 रा त्व मा बो ने ॥ उ अ च म्भ ॥ सु र्यो ई ॥ अ द्वा
 र ॥ यथा गो व य थो द स प्र थ न क र ह
 का द स पि रा आ द्रु क तुं श्री सू र्यो य अ

चैनम॥ मोक्षं च करोतीति॥ शिवं पूजा॥ शिवो
देवताय ईदमा सतनम॥ ये वै स्नानपाद्य
आर्च्यपञ्चाशतस्नानचन्दनसिंदूरअक्ष
तमयज्ञोपवितपुष्पनमः॥ हवनेषा तास
नवोकीचोयेधुपदीपधौवजीमरीफलैः 24
ग्राह्यैश्चाये॥ इदं फलपुष्पैः॥ स्नानं॥
मूलाय भुक्तनाथाये पुष्पगुताय साखरी॥
शिखिने चरमुनिर्त्तिना सो हं दुःखपिणी॥
आजं चारि॥ हवनेषा तास नवोकी
चोये॥ तीर्था कुलनामनतये॥ पुथमक
लायेका दत्तपिरा स न उपतिष्ठताम॥

पिरा पात्रा स न य॥ कोऽन्ना ह्यये॥ पिराथ
ये॥ अन्नः अनुक गो च अनुक देस प्रथम
क॥ येका दत्तपिरा उपतिष्ठताम॥ हा
सिने॥ पिरा नाम उ०॥ तीर्था दत्त उपति
ष्ठताम॥ अनुक ना तप्रेताय यज्ञोपवीत व 24
दत्त अक्षत तं गराजं भृंगराजं पुष्प उपति
ष्ठताम॥ योता स न चोकी चोये॥ कृष्ण पक्षा
त्रयो वजीग्वाग्ने धुपदिपतये॥ को ग
लायार्ह दत्त पुष्पैः॥ कोऽन्ना ह्यये
तांके॥ पिरा पात्रा दत्त अक्षि या तद्वि
रस्तु उपतिष्ठताम॥ अन्ना नो पुये॥ ॥

मोच ॥ क० ॥ पुथ मरुपा य पिरा मेका देशदि
ने ॥ शुद्धि पासां थ संस्तु व भुंजते पितृ देव
ता ॥ खे पूरा सर्व भावा नां सर्वा ये वि द्विका
रकः ॥ ते न पिरो सति हंती शिव नो र्कस
ग दूती ॥ से जही ने क्षपा हीन ॥ अ ज ग २६
धादि ॥ त्या तने ॥ शिद्धि के अराय पुष्प
नमेः ॥ पुथ मरुपा पिरा पुष्प नमः
उपतिष्ठ ता नृ ॥ की ग क का पूजा याये ॥ शि
द्धि के अराय सत्यस्था न बा लो न व तु ॥ प्र
थम मरुपा पिरा स्व स्था न बा लो न व तु ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 चं चं चं चं चं ॥ ॥ सर्वोक्तिं चं चं चं चं चं
 तानीः पूर्वैः कृतानीं पुनः यत्नमा शिष्यैः
 कृतं तेनैव विराड्वाक्यं भागीरथीनं हर
 शोऽप्युवाच ॥ ॥ तादात्म्यं भो पुत्र ॥ सूच्यं मा २०
 द्वि ॥ विराट्वाक्यं सततं यत्नं चिन्तयेत् ॥
 तद्वत्त्वं सोऽहं वै ॥ ॥ सुमीध्रीनं चिन्तयेत्
 महाद्योदयं वै ॥ यत्नं भाते ब्रह्माया वै ॥
 तौ ध्वं स्वरा ईदमा सततं नमः ॥ पुनश्च चन्द्रा
 धातुं ध्वं उपतिष्ठति ॥ सा दुन्दुब्ये ॥

पयः पृथिव्यां ॥ सितुर्न यममानसक ॥ य
ताहा साये विषयाज ॥ एअमानवतया
उरुतायुहा ये ॥ यममाननलीस हाहाया
नाहे वन ॥ न लकवने हाये ॥ बाकोदको
हा बाको इयालजी देय ॥ इति यका द
सवी यान लमा ही सु ॥

सर्वार्थार्थ सादा अर्थार्थ गतेराज

श्री ५५५

1.062